वेदों में वैज्ञानिक संचेतना

प्रो. शीलता प्रसाद पाण्डेय
–गायत्री तिवारी (शोध छात्रा)

ज्ञानार्थक 'विद्' धातु से निश्पन्न 'वेद्' शब्द का अर्थ ज्ञान है। यह ज्ञान समस्त आध्यात्मिक और लौकिक ज्ञान के स्रोत या आधार के रूप में है। इसे ईश्वरीय ज्ञान कहे या प्राचीनतम ऋषियों के द्वारा अपनी प्रतिभा से प्राप्त सत्य ज्ञान कहा जा सकता था।

वैयाकरण लोग वेद शब्द का निर्वचन भाव अर्थ में 'ज्ञान या जानना' नहीं करके करण अर्थ में 'ज्ञान का साधन' करते हैं। 'विद्यते ज्ञायतेऽनेनेति वेदः' जिसके द्वारा कोई ज्ञान प्राप्त किया जाय वही वेद है।

वेद परम–प्रमाण अर्थात् आगम या भाब्द प्रमाण में उत्कृश्ट है। वेद से वह ज्ञान मिलता है जिसे प्राप्त करने के लिए अन्य कोई साधन इस जगत् में नहीं है।

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते।
एवं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।।

वेदों में विज्ञान

विज्ञान की विस्मयकारी प्रगति विश्वभर के कर्मठ वैज्ञानिकों के सामूहिक प्रयास का प्रतिफल है। यह सर्वविदित है कि विज्ञान की दृश्टि से प्राचीन भारत की उपलब्धियाँ विस्मयकारी भी हैं। परन्तु ऐसा देखा गया है कि वर्तमान में जब भी प्राचीन भारतीय विज्ञान की चर्चा होती है तो भारतीय जनमानस दो गुटों में विभाजित हो जाता है, एक गुट के अनुसार हमारे पूर्वजों ने प्राचीन काल में ही सब कुछ खोज लिया था, तो दूसरे गुट के अनुसार प्राचीन भारतीय वाङ्मय में कुछ भी वैज्ञानिक नहीं है। पहले गुट के अनुसार यदि प्राचीन ग्रन्थों को भलीभाँति व्याख्या की जाए तो आधुनिक विज्ञान के सभी आविश्कार उसमें पाए जा सकते हैं।

जब प्राचीनकाल के विज्ञान पर गहन चर्चा की जाती है तो भारतीय जनमानस अपने दावे की पुश्टि के लिए प्राचीन ग्रन्थों (वेद, पुराण, उपनिशद्, रामायण, महाभारत आदि) के उपलब्धियों के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं, जैसे– राडार प्रणाली (रूपाकर्शण रहस्य) गौमूत्र को सोने में बदलने की तकनीक, मिसाइल तकनीक, कृष्ण विवर का सिद्धान्त, सापेक्षता का सिद्धान्त एवं क्वांटम सिद्धान्त, विमानों की भरमार, अनिश्चितता का सिद्धान्त संजीवनी औषधि इत्यादि।

वर्तमान अनुसंधानों में ऐसे प्रमाण मिले हैं। जिससे यह प्रतीत होता है कि सिन्धु घाटी सभ्यता मिश्र तथा बेबीलोन की सभ्यता के लोग कच्ची–पक्की ईंटो और लकड़ी के अच्छे भवनों में रहते थे। जो योजना के अनुसार बने थे। वहाँ की नालियां ग्रीड पद्धति के अनुसार बनी थी। पुरातत्ववेत्ताओं को मोहनजोदड़ो से एक विशाल स्नानागार मिला है। सिन्धुघाटी सभ्यता के स्थानों से मिले हैं जिनमें आश्चर्यजनक रूप से एकरूपता है। यहाँ की लिपि को अभी तक नहीं पढ़ा जा सका है।

विद्वानों का अनुमान है कि सिंधु सभ्यता के लोगों को रेखागणित और अंकगणित का अच्छा ज्ञान रहा होगा।

प्राचीन भारतीय खगोल विज्ञान– (ancient astronomy) में उपस्थित ज्ञान विज्ञान को आर्य लोग साक्षात् कर लेते हैं फिर वह चाहे खगोल विज्ञान हो भारीर रचना विमान आदि या फिर परमाणु जैसी भाक्ति।

पारे (Mercury) का इतिहास विदेशियों को भले 11वीं सदी में चला हो, परन्तु भारतवर्श में हजारों वर्शों से पारे को जानते ही नहीं थे बल्कि इसका उपयोग औषधि विज्ञान व विमान निर्माण आदि में भी बड़े पैमाने पर होता था।

वैदिक संस्कृति के कीर्तिमान (vedic culture records) आज विश्व में जो भी अच्छा है उसका मूल यही आर्यावर्त देश ही है ऐसा जानना और मानना ही उचित होगा जिससे सभी भारतवासी आर्य हिन्दू अपने पूर्वजों पर गौरव अनुभव करें, क्योंकि वैदिक जन शुद्ध वैज्ञानिक थे।

वेदों में वर्णित बिना ईधन के उड़ने वाले विमान (vedic planes) प्राचीन समय आर्यावर्त में इतनी

भौतिक उन्नति हुई थी कि दरिद्र के घर भी विमान थे। – **(महर्शि दयानन्द)।**

यह सुनकर ए. ओ. ह्यूम ने महर्शि दयानन्द को पागल कहते हुए कहा कि मनुश्य कभी आकाश में नहीं उड़ सकता विमान का आविश्कार होने के बाद ह्यूम ने स्वामी दयानन्द जी से अपमान के लिए क्षमा मागी।

वेद चार हैं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद। इनकी चार अलग–अलग संहिताएं हैं बिखरे हुए वेद मंत्रों का संकलन करने का कार्य ऋशियों ने संपन्न कर उन्हे संहिताओं में विभाजित किया। भू–मण्डल में स्थित चार वस्तुओं में से जल के सम्बन्ध में सामवेद में वर्णन किया गया है। सामवेद में जल के इस रूपान्तर कार्य तथा गुणों का ज्ञान आदि वि लेशणात्मक एवं वैज्ञानिक ढंग से सविस्तार उपलब्ध है। ऋग्वेद में अग्नि के बारे में ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

यजुर्वेद में वायु के विभिन्न प्रकार एवं उनके कार्यों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है इसी प्रकार अथर्ववेद में मृदा के विभिन्न गुणों के सम्बन्ध में जानकारी हो सकती है, इसी प्रकार जल, अग्नि, वायु, और मृदा को क्रमशः 21, 100, 1000, 9 मुख्य विभाग होते है। यजु का अर्थ वायु है और अथर्व का अर्थ मिट्टी है।

प्रत्येक वेद में जल, अग्नि, वायु और मिट्टी पारिभाशिक भाब्द हैं और उनसे केवल हमारे इस जल, अग्नि, वायु, और मिट्टी का ही तात्पर्य नहीं है, वरन् इन चारों पदार्थों के आदि स्वरूप प्रकृति की अव्यय अवस्था से लेकर स्थूलतम अवस्था तक जितने रूप प्रकारान्तर विभाग इत्यादि बनते है, उन सबका जाति वाचक नाम जल अग्नि वायु और मिट्टी वेद में निहित है।

अग्नि विज्ञान (Energy) - चारों वेदों में अग्निविद्या या अग्निविज्ञान से संबद्ध सैकडो मन्त्र है इसमें अग्नि के गुण, धर्म, कर्तृत्व, व्यापकता आदि का विस्तृत विवेचन हुआ है

आधुनिक विज्ञान के अनुसार भौतिकी में इन विषयों पर विचार होता है Force (शक्ति) Motion (गति) Energy (ऊर्जा) Power (सामर्थ) Heat (ताप) Sound (ध्वनि) वेदों में ऊर्जा का प्रतिनिधि अग्नि को माना गया है। **यर्जुवेद का कथन है -** कि अग्नि अक्षय और अमर है यह नश्वर जगत में अमर (Indestructible) वेदों में ऊर्जा के विषय में कहा गया है कि अग्नि एक ही है। इसका रूपान्तरण होता है अतः उसके अनेक नाम हो जाते है उसमें सभी कार्यों को करने की क्षमता है अतः उसे विश्वकर्मा कहते हैं। वह महाशक्तिशाली है, वह अनेक रूप धारण करता है, अतः उसे पुरुरूप कहा गया है ऊर्जा सभी रूपों को धारण करती है अतः उसे विश्वरूप कहा गया है, ऊर्जा समूह के रूप में चलती हैं, अतः उसे संहत् कहा गया है।

ऊर्जा पुंजीभूत है– ऊर्जा की संख्या सहस्त्रों है, अतः उसे शतिन् और सहस्त्रिन् आदि कहा गया है। अग्नि को ऊर्जा का स्वामी और शक्ति का पुत्र आदि नामों से सम्बोधित किया गया है।

शतिनं पुरुरूपम्
अग्ने बृहतो दाः सहस्त्रिणः।
सूनो सहस्त्र ऊर्जा पते।

गविष्टि और अश्वमिष्टि– वेदों में गविष्टि और अश्वमिष्टि शब्दों का पारिभाषिक शब्दों के रूप में प्रयोग हुआ है गविष्टि– गो+इष्टि गो शब्द का अर्थ सूर्य की किरणे हैं, अतः गविष्टि सूर्य– किरण – विज्ञान अर्थात् सूर्य की किरणों का विवेचन है।

अश्वमिष्टि – अश्व+मिष्टि शब्द का अर्थ है अग्नि आदि की अश्वशक्ति या कार्य–परिमाण का विवेचन है ।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार अश्वशक्ति 745.7 Watts प्रति सेकेण्ड है, वेदों में इसको अश्वमिष्टि कहा गया है

मघवन् गविष्टये–– अश्वमिष्टये।
अग्निे –– अश्वमिष्टे।

वैश्वानर अग्नि– (Universal energy) वेद का मंतव्य है कि विश्व के प्रत्येक कण में ऊर्जा है। विश्वव्यापी ऊर्जा को वेदो में वैश्वानर अग्नि, सृष्टि के प्रत्येक वस्तु का उत्पादक और सृष्टिकर्ता, कहा गया है। इस वैश्वानर अग्नि को संसार का केन्द्र (Center) कहा गया है। यह संसार को अपने आकर्षण से अपने

वश में किये हुए हैं।

रसायन विज्ञान– (Chemistry) वेदों में रसायन विज्ञान से संबद्ध कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र मिलते हैं इनमें जल की उत्पत्ति, जल का महत्त्व, जल के गुण ,जल के भेद, जल से सृष्टि,विविध धातुएँ, उनका मिश्रण, उनके विविध उपयोग, लवण,जल और रत्नो का औषधि आदि के रूप में वर्णन होता है।

जल की उत्पत्ति– अथर्ववेद का कथन है कि जल में अग्नि (Oxygen) और सोम (Hydrogen) दोनों है । वेदों में ऑक्सीजन के लिए अग्नि, मित्र, वैश्वानर अग्नि और मातरिश्वा आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। (Hydrogen) के लिए सोम, जल, सलिल, वरुण आदि का प्रयोग हुआ है। अथर्ववेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि जल में मातरिश्वा वायु प्रविष्ट है। ऋग्वेद का कथन है कि जल में वैश्वानर अग्नि विद्यमान है।

अग्निसोमौ बिभ्रति–आप इत् ताः।
अप्सु–आसीन्–मातरिश्वा प्रविष्टः।
वैश्वानर यासु–अग्नि प्रविष्टः, ता
आपः।

ऋग्वेद में जल का सूत्र दिया गया है कि मित्र और वरुण के संयोग से जल प्राप्त होता है। जल कि प्राप्ति के लिए पवित्र ऊर्जा वाले मित्र और दोषों को नष्ट करने वाले वरुण को ग्रहण करता हूँ मन्त्र में मित्र और वरुण शब्दों के द्वारा (Oxygen) और (Hydrogen) का निर्देश है परन्तु इनकी मात्रा का स्पष्ट संकेत नहीं है।

जल का सूत्र – H_2O। विज्ञान के अनुसार (Hydrogen) गैस के दो अणु और आक्सीजन के एक अणु (Molecule) एक पात्र में रखकर उसमें विद्युत तरंग प्रवाहित करने पर जल प्राप्त होता है ऋग्वेद के चारों मन्त्रों (ऋग् 7.33.10 से 13) के इन विषय को स्पष्ट किया गया है। इन मन्त्रों में कहा गया है कि एक कुम्भ में मित्र वरुण का रेत वीर्य ,कण उचित मात्रा में एक ही समय में डाला गया और उससे अगस्त्य और वसिष्ठ ऋषि का जन्म हुआ इस कार्य के लिए विद्युत् का प्रवाह छोडा गया। अगस्त्य और वसिष्ठ उर्वशी (विद्युत्) के मन में उत्पन्न हुए हैं , अर्थात् ये दोनों उर्वशी के मानस पुत्र है।

वनस्पति–विज्ञान– (Botany) चारों वेदों और ब्राह्मण ग्रन्थों में वनस्पतिशास्त्र से संबद्ध पर्याप्त सामाग्री है। ऋग्वेद यजुर्वेद और अथर्ववेद में वृक्ष–वनस्पतियों की उपयोगिता के विषय में विवरण प्राप्त होता है। वृक्ष मानवमात्र को प्राण वायु देते हैं, इसलिए ये मानव के रक्षक,पोषण और माता पिता हैं। मनुष्य प्राणवायु के बिना जीवित नहीं रह सकता है, अतः वृक्ष,वन,वनस्पतियों और औषधियों को रक्षक बताया गया है। वृक्ष–वनस्पति केवल प्राणवायु के ही साधन नहीं है, अपितु उनका पंच अंग अर्थात् पाँचों अंग उपयोगी हैं। ये पाँच अंग हैं – 1. मूल (जड), 2. स्कन्ध, शाखा (तना और शाखाएँ), 3. पत्र (पत्ते), 4. पुष्प (फूल) और 5. फल । काष्ठ की प्राप्ति का एकमात्र साधन वृक्ष है। पत्ते, फूल और फल मानव जाति के आच्छादन, भरण–पोषण, भोज्यपदार्थ, रोगनाशन आदि के द्वारा मानव के लिए सुख सुविधा के साधन है। ये वातावरण को शुद्ध करते हैं और प्राणिमात्र को अरोग्य प्रदान करते हैं।

ऋग्वेद में औषधि सुक्त है। वृक्ष, वनस्पति और औषधियों के उत्पत्ति मानव सृष्टि से बहुत पहले हुई है। ये औषधियाँ देवों से भी तीन युग पहले उत्पन्न हुई हैं। औषधियाँ माता की तरह मानव की रक्षा करती है, अतः उन्हे मातरः कहा गया है। औषधियाँ विविध रोगों और प्रदूषक (अमीव) को दूर करती हैं। ऐसी औषधियों के संग्रहकर्ता को वैद्य कहते हैं। औषधियाँ दोषों को दूर करके सुरक्षा प्रदान करती हैं, औषधियाँ चोट,घावों आदि को ठीक करती हैं और शरीर के दोषों को निकालती हैं औषधियाँ शरीर की निर्बलता को दूर करती हैं और रोगों का निवारण करती हैं औषधियों से रोग समूल नष्ट हो जाते हैं, अतः कहा गया है कि रोग की आत्मा ही नष्ट हो जाती है। औषधियाँ शरीर के प्रत्येक अंग–प्रत्यंग में अपना प्रभाव पहुँचाकर शरीर के सारे रोगों को बाहर निकालती है। औषधियाँ रोग, शोक, शाप और मृत्यु के बन्धन से छुडाती है। औषधियों में दिव्यशक्ति है। जो इनको अपना लेता है या इनका सेवन करता है ,वह कभी रोगी नहीं होता है औषधियाँ शक्ति और वीर्य प्रदान करती हैं शरीर के समर्थ को अक्षुण्य बनाये रखती हैं।

जन्तु विज्ञान (Zoology) चारों वेदों में जीव–जगत् से संबंद्ध समाग्री प्राप्त होती है। इसमें जीवों के नाम उनका वर्गीकरण, उनके गुण–कर्म और स्वभाव, उनकी आदि का विवरण प्राप्त होता है।

पशु का व्यापक रूप–अथर्ववेद में पशु शब्द का व्यापक अर्थ में प्रयोग हुआ है। 'पश्यति इति पशु' जो देख सकते है या जिनमें दर्शनशक्ति है, वे सभी पशु है। इसमें मनुष्य को भी पशु में गिना गया है। ये पशु पाँच प्रकार के है गाय, अश्र, पुरूष मनुष्य अज बकरी और अवि (भेड) यजुर्वेद, तैत्तिरीय, काठक एवं मैत्रीयणी संहिताओं में तथा शतपथ ब्राह्मण में भी इन पाँच पशुओं का उल्लेख मिलता है।

जीवों का वर्गीकरण– पशु पक्षी दोनों को संम्मिलित करते हुए कई प्रकार के वर्गीकरण किए गए है।

(क) दो प्रकार के पशु :

1 ग्राम्य : गाँव में रहने वाले या पालतू।

2. आरण्यः जंगल में रहने वाले।

यह विभाजन मैत्रीयणी और काठक संहिता आदि में भी मिलता है।

(ख) तीन प्रकार के पशु:– पशुओं में पक्षियों आदि को भी सम्मिलित करते हुए

1. **वायव्य**– आकाशीय या नभचर जीव,पक्षी आदि।

2. **आरण्य**– वन्य या जंगल में रहने वाले पशु **3. ग्राम्य**–: गाँव में रहने वाले या पालतू। अथर्ववेद में ग्राम्य पशुओं को विश्वरूप और विरूप बताते हुए एकरूप कहा गया है। इसका अभिप्राय यह है कि पशु आकृति और रूप रंग की दृष्टि से अनेक प्रकार के है, परन्तु पशुत्व जाति की दृष्टि से वे एक रूप है। कार्य और व्यवहार की दृष्टि से इनकी एकरूकता है।

शिल्प विज्ञान (Technology)– शस्त्र और अस्त्र : शुक्रनीति में अस्त्र और शस्त्र का अन्तर स्पष्ट किया गया है कि जो मन्त्र या यन्त्र के द्वारा फेंका जाता है, उसे अस्त्र (Missile) कहते है। जिन्हें हाथ में लेकर लड़ा जाता है। उन्हें शस्त्र कहते है। जैसे– असि तलवार, कुन्त भाला आदि। अस्त्र दो प्रकार के होते है। मंत्रशक्ति से छोड़े जाने वाले (मांत्रिक, दिव्य अस्त्र) और दूसरे यान्त्रिक किसी यंत्र या मशीन से छोड़े जाने वाले अथवा नालिक (नली वाले यंत्र छोड़े जाने वाले) नालिक के भी दो भेद है। लघुनालिक (छोटी नली वाले बन्दूक आदि), बृहत्–नालिक (बड़ी नली वाले, तोप आदि)। लघुनालिका का छेद छोटा होता है। और यह थोड़ी दूर तक के लक्ष्य का भेदन करता है। बृहत्– नालिका का छेद बड़ा होता है। यह बहुत दूर तक के लक्ष्य को भेदन करता है। (शुक्रनीति 4.7.181 से 185) **दिव्य अस्त्र** - वेदों में अस्त्र (Missile) के लिए हेति और मेनि शब्द हैं। दिव्य अस्त्रों का प्रभाव असाधारण होता था। ये प्राकृतिक शक्तियों से जन्म होते थे। जैसे– विद्युत, अग्नि, वायु आदि से जन्य अथवा किसी देवता या ऋषि द्वारा प्रदत्त होते थे। इन दिव्य अस्त्रों का उल्लेख वेदों में मिलता है।

(1)आग्नेय अस्त्र या अग्निबाण - आग्नेय अस्त्र को अग्निबाण भी कहते थे। इसके प्रयोग से जलती हुयी आग चारों ओर फैल जाती है। यह अग्नि के साथ धुआँ भी फेंकता था, जिससे शत्रु बेहोश हो जाते थे। अथर्ववेद में वर्णन है कि आग्नेय अस्त्र के प्रयोग से शत्रु बेहोश हो गए और इन्द्र ने उनके सिर काट लिए। इनके प्रयोग से अन्धा होने का वर्णन है। शत्रु अन्धे हो गए और सेना पराजित हो गई।

तेषां वो अग्निमूढानाम् इन्द्रो हन्तु वरंवरम्।

चक्षूंषि– अग्निरादत्तां पुनरेतु पराजिता।

(2) **वायव्य अस्त्र**–इसको मारूत अस्त्र भी कहते है। इसके प्रयोग से आँधी जैसी तेजी हवा चलने लगती थी। और शत्रु किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते थे। अथर्ववेद में वर्णन है कि इन्द्र इस अस्त्र के प्रयोग से शत्रुओं को इधर–उधर भगा दे।

अग्नेर्वातस्य ध्राज्या तान् विषूचों वि नाशय।

(3) **पाशुपत अस्त्र** : इसका रुद्रास्त्र भी कहते है। पशुपति या रुद्र शिव का नाम है। ऋग्वेद और यर्जुवद में रुद्र के इस अस्त्र का वर्णन है और इससे बचाव की प्रार्थना की गई है। (यजु0 16.50)

परि णो हेती रुद्रस्य वृज्याः।

(4) **ब्राह्मास्त्र** - यह ब्रह्मा का अस्त्र माना जाता था। इसकी प्रहारक शक्ति असाधारण थी। इसकी कोई काट नहीं थी। अथर्ववेद में कहा गया है कि यह सबसे बड़ा प्रहारक है। यह अस्त्र घोर तपस्या का फल है।

ब्रह्मणो हेते तपसश्च हेते।
मेन्या मेनिरसि0।

(5) आथर्वण अस्त्र - यह अथर्वन् ऋषि द्वारा आविष्कृत था। इसका प्रयोग चोर, हिंसक पशु आदि पर किया जाता था। अथर्ववेद में वर्णन है कि इसके प्रयोग से व्यक्ति या पशु निश्चेष्ट हो जाता था और पकड़ा जााता था।

न संयमों न वि यमो0 आथर्वणमसि
व्याघ्रजम्भनम्

(6) वारुण अस्त्र या वरुण के पाश -ऋग्वेद यजुर्वेद और अथर्ववेद में इसका उल्लेख है। ये नागपाश अर्थात् साँप की तरह मनुष्य को लिपट कर बांध लेते थे और पापी को जकड़ कर मार देते थे। (ऋग् 01.24. 15,यजु 12.12)

ये ते पाशा वरुण सप्तसप्त0।

(7) संमोहन अस्त्र - अथर्ववेद में उल्लेख है कि इस अस्त्र के प्रयोग से शत्रुसेना को बेहोश कर दिया जाता था और उसके साथ हाथ काट लिए जाते थे। 2

अग्नि....................स सेनां मोहयतु परेषां
निर्हस्तान् च कृणवत0।

(8)तामस अस्त्र– चारों वेदों में इसका उल्लेख है। यह अस्त्र अश्रु गैस (Tear Gas) के तुल्य होता था। वह चारों ओर धुआँ फैला देता था। धुएँ से चारो ओर अंधेरा हो जाता था। शत्रुसेना के सैनिकों का दम घुटने लगता था और वे किंकर्तव्यविमूढ़ होकर इधर–उधर भागने लगते थें। इसके लिए कहा गया है कि इससे शत्रुसेना के सैनिक एक–दूसरे को पहचान नहीं पाते थे। इस अस्त्र का दूसरा नाम 'अप्वा' भी था। यह अंगों को शिथिल कर देता था। त्रिषन्धि सेनापति ने इस अस्त्र के प्रयोग से सारी शत्रुसेना को नष्ट किया था।

तां विध्यत तमसापव्रतेन, यथैषामन्यो अन्यं न जानात्

(9) ऐन्द्र अस्त्र या वज्र–चारों वेदों में वज्र की चर्चा है। यह इन्द्र का प्रमुख अस्त्र है। यह अयस् अर्थात् उत्तम कोटि के लोहे या फौलाद का बना हुआ था। इन्द्र के वज्र में तीन संधि या जोड़ थे, अतः इसे त्रिषन्धि कहते थे। इन्द्र के वज्र को हजार नोक वाला बताया गया है।

अभ्येनं वज्र आयसः सहस्त्रभृष्टिः
वज्रेण त्रिषन्धिना।

अथर्ववेद में वर्णन है कि 100 गांठ वाला भी वज्र होता था और इससे एक साथ सौ व्यक्तियों का वध किया जा सकता था।

वज्रेण शतपर्वणा तीक्ष्णेन।
मेनिः शतवधा हि सा।

(10) अग्निपुराण में वर्णित शस्त्रास्त्र– (अध्याय 248) 5 भेदों का वर्णन है–

(1) यन्त्रमुक्त– यंत्रों आदि से फेंके जाने वाले। जैसे– प्रक्षेपक यंत्र बन्दूक आदि से छोड़े जाने वाले गोले आदि।

(2) पाणिमुक्त– हाथ में फेक जाने वाले। जैसे – भाला आदि।

(3) मुक्तसंधारित – फेंक कर फिर वापस किये जाने वाले, नोकीला आयुध जिसके द्वारा खींचकर पास लाई जावे। जैसे– कांटेदार जाल आदि।

(4) अमुक्त – हाथ में रखे जाने वाले। जैसे – खड्ग आदि

(5) बाहुयुद्ध– बाहुयुद्ध वाले उपकरण। **यन्त्रमुक्तं पाणिमुक्तं, मुक्तसंधारितं तथा।**
अमुक्तं बाहुयुद्धं च, पंचधा तत् प्रकीर्तितम्।

(11) कौटिलीय अर्थशास्त्र में वर्णित शस्त्रास्त्र - कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में शास्त्रास्त्रों के विषय में कुछ उपयोगी बाते दी हैं। यंत्रों द्वारा चालित अस्त्रों को दो भागों में बाँटा है– स्थितयंत्र और चलयंत्र। स्थितयंत्र

वे अस्त्र हैं, जिसकी मशीन एक ही स्थान पर रहती है। चलयंत्र वे हैं, जिनकी मशीन इधर–उधर ले जाई जा सकती है।स्थितयंत्र के कुछ भेदों में से ये हैं–

1 सर्वतोभ्रद – जिसमें चारों ओर गोला आदि फेंका जा सके। जैसे– मशीनगन। **2. जामदग्न्य** – बाण बरसाने वाला बड़ा यंत्र। **3. विश्वासघाती** – दुर्ग के द्वार के पास खाई के ऊपर रखी हुई तिरछी मशीन। इसके स्पर्श से मृत्यु हो जाती थी। **4. पर्यन्यक** – यह वरूणस अस्त्र है। आग बुझाने वाला यं, दमकल या फायर ब्रिगेड। (कौ० अर्थ० पृष्ठ 201) इनमें कुछ ये हैः–

1. पांचालिक – बढ़िया लकड़ी पर तेज वाला यंत्र यह दुर्ग के बाहर जल के अन्दर रखा जाता था। इसको जल–सुरंग (Mine) कह सकते है।

2. शतघ्नी : किले की दीवार पर रखा स्तम्भ की आकृति यंत्र। इससे एक साथ सौ मनुष्यों को मारा जा सकता था।

3. त्रिशूल : वर्तमान त्रिशूल की आकृति का अस्त्र।

4. चक्र : तीक्ष्ण धार वाला चक्र। इसी अस्त्र के प्रयोग के कारण श्रीकृष्ण को चक्रधर कहते थे।

कवच और आवरण – कौटिल्य ने 6 प्रकार के वर्म (कवच) बताए है। ये हैं– **1. लोहजाल** –सिर से पैर तक ढकने का लोहे का आवरण।

2. लोहजालिका– सिर को छोड़कर अन्य अंगो को ढकने वाला आवरण।

3. लोहपट्ट– हाथों को छोड़कर शेष सारे शरीर को ढकने वाला आवरण।

4. लोह कवच– केवल छाती और पीठ को ढकने वाला आवरण।

5. सूत्रकंकट– पक्के सूत का बना कवच, कमर से कूल्हे तक की रक्षा के लिए।

6. मिश्रित कवच– यह शिंशुमार (सूंस जलजन्तु) और गैंडा आदि के चमड़े, खुर और सींग के मिश्रण से बनाया जाता था। इनके अतिरिक्त

7 प्रकार के अन्य आवरण बताए हैं– शिरस्त्राण, कण्ठत्राण, कूर्पास, कंचुक, वारवाण, पट्ट, नागोदरिका।

मानवीय अस्त्र, शस्त्र – वेदों में अस्त्र और शस्त्र के लिए आयुध शब्द का प्रयोग है। आयुध जीवनरक्षक है, अतः ऋग्वेद में कहा है कि योद्धा आयुध को अपना प्रिय भाई या सम्बन्धी मानते है। युद्धों में अस्त्र और शस्त्र दोनों का प्रयोग होता था। वेदों में अनेक आयुधों का वर्णन है। उनमें से कुछ विशिष्ट शस्त्रात्रों का विवरण दिया जा रहा हैः–

(1) धनुष – चारों वेदों के सैकड़ों मंत्रों मे धनुष का वर्णन है। यजुर्वेद के अध्याय 16 में शिव के धनुष का नाम पिनाक दिया गया है, (मंत्र 51)। धनुर्धारी के लिए ये शब्द आये हैं– धानुष्क, धन्वयिन्, इषुमत् धन्वासह। कौटिल्य ने बताया है कि धनुष 4 प्रकार से बनाए जाते थे– 1. ताल (ताड़) से, 2. चाप (बाँस) से, 3 दारव (बढ़िया लकड़ी) से, 4 शाङ्र्ग (सींग) से। धनुष को कार्मुक, कोदण्ड, द्रूण भी कहते हैं।

2 बाण – वेदों में बाण के लिए बाण, इषु, शर, शरव्या, शल्य, सायक आदि शब्द आए हैं। बाण का अगला भाग लोहे, हाथी दाँत या अन्य कठोर पदार्थ

सन्दर्भग्रन्थसूची

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ. उमा ाङ्कर भार्मा ऋशि।
2. वैदिक संस्कृति – गोविन्द्रचन्द्र पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, 2009
3. वेद व विज्ञान – स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 2012
4. वेदों में विज्ञान – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद, ज्ञानपुर, भदोही 2014

– संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

M/S. RAJENDRA KUMAR
PRAHLADDAS RATHI
GENERAL MERCHANT & COMMISSION AGENT

GSTIN 23ABAPR6819F1ZR
GAUTAMPURA - 453 220, Dist. Indore (M.P.)
Phone : 07322 (O) 230224, 230222
Mob. 94250-66424

शुभकामनाएँ...

Radhe Shyam Singhal
Arpit Singhal

New
Agrawal
Sweets

Specialist in Sweet Namkeen

शुभकामनाएँ...

Sapna Sangeeta Main Road
Tower Chouraha, INDORE
M. : 9644378961

हरिद्रा

(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)

अग्रह लेखकों से :–

- शोध पत्र में शीर्षक, नाम, पद, पदस्थापना का विवरण, पत्र व्यवहार का पता तथा दूरभाष क्रमांक, मोबाइल नं. ई–मेल एड्रेस अपेक्षित है।
- शोध पत्र के प्रारम्भ में कम से कम 50– 100 शब्दों का सारांश दिया जाये।
- मुख्य शब्द सांराश के नीचे रहना चाहिए।
- शोध पत्र में शोध पद्धति तथा शोध में प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया जाना चाहिए।
- शोध पत्र में निष्कर्ष और अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी जाये। संदर्भ ग्रंथों का विवरण पूरा दिया जाये।
- लेखक का नाम, वर्ष, पुस्तक का नाम, प्रकाशक का विवरण, प्रकाशक का स्थान और पृष्ठ संख्या आदि का विवरण दिया जाना चाहिए।
- शोध पत्र माईक्रोसॉफ्ट वर्ड की फाइल में टाइप किया हुआ होना चाहिए। (नोट– पेज मेकर की फाइल, पी डी एफ . फाइल , स्कैन मैटर आदि में शोध पत्र न भेजें) शोध पत्र हिन्दी / संस्कृत लिपि में कृतिदेव (फॉन्ट साइज 14) में भेजा जाना चाहिए, और अंग्रेजी में फॉन्ट एरियल (फॉन्ट साइज 14) में भेजा जाना चाहिए।
- शोध पत्र के साथ यह घोषणा अवश्य संलग्न करें कि शोध पत्र मौलिक है तथा इसे कहीं अन्यत्र प्रकाशनार्थ प्रेषित नहीं किया गया है।
- शोध पत्र ई–मेल द्वारा भेजें– haridra5@outlook.com
- शोध पत्र की स्वीकृति की सूचना सम्पादक कार्यालय द्वारा लेखक को ई–मेल एवं दूरभाष द्वारा प्रदान की जाती है।
- रिसर्च जरनल में प्रस्तुत किये गये विचार और तथ्य लेखकों के हैं, जिनके विषय में रिसर्च जनरल हरिद्रा के सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। रिसर्च जनरल के सम्पादन एवं प्रकाशन में पूर्ण सावधानी रखी गई है, किन्तु किसी त्रुटि के लिए हरिद्रा रिसर्च जनरल का सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। सम्पादन का कार्य अव्यावसायिक और ऑनरेरी है। सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र, इन्दौर जिला इन्दौर (म.प्र.) रहेगा।

Recest tko Avthors

General: This is Multiligual Research Journal hence research papers can be sent in Hindi, Sanskrit or English. Manuscript of research paper: It must be original and typed in double space on the one side of paper (A-4) and have a sufficient margin script should be checked before submission as there is no provision of sending proof. It must include Abstract, Keywords, Introduction, Methods, Analysis, Results and References. Hindi/Sanskart manuscripts must be in Kruti Dev 010 font, font size 14 and in double spacing. All the manuscripts should be in two copies. soft copy of manuscripts should be in Microsoft word Formet fount Arial and font size 14. Authors are solely responsible for the (actual accuracy of their contribution)

References : References must be listed cited inside the paper and alphabetically in the order- Surname, Name, Year in bracket, Title, Name of book, Publisher, Place and Page number in the end of research paper.

Review System: Every research paper will be reviewed by members of reviewer Bord. The criteria used for acceptance of research papers are contemporary relevance, contribution to knowledge, clear and logical analysis, fairly good English, sanskrit or Hindi sound methodology of research papers. The Editor reserves the right to reject any manuscript as unsuitable in topic, style or form without requesting external review.

प्रकाशक तिथि 25/01/2020 | प्रेषण तिथि 25/01/2020 | प्रेषण स्थल- इन्दौर

ध्येय पथ के निर्माता...

महामहोपाध्याय आचार्य गणेशदत्त जी त्रिपाठी

जन्म : २६ नवम्बर

गोलोकगमन : १ अप्रैल २०१२

अभिजीत त्रिपाठी, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक अभिजीत त्रिपाठी द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स सांवेर रोड़, इन्दौर से मुद्रित एवं ३१८, प्रोफेसर कालोनी, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित

सम्पादक – अभिजीत त्रिपाठी